धर्म जीवन

नवम्बर 2004

✡ भगवान देवात्मा के कुछ फरमान

✡ मेरी अद्योगति के कारण और धर्ममार्ग की रोकें

✡ परम पू० भगवान देवात्मा का 154 वां महोत्सव मुबारक

✡ 2,000 साल की गुलामी

✡ एक पत्नि की नज़र में

✡ सत्य धर्म बोध उत्सव

✡ शुभ संग्राम

भगवान देवात्मा के कुछ फरमान

तुम यह विश्वास रखो कि जब तक किसी नीचता के लिए तुम्हारे भीतर प्यार वर्तमान रहेगा, तब तक तुम्हारी वह नीचता बराबर जारी रहेगी और बढ़ती जाएगी। ज़िंदगी का सारा दारोमदर इस बात पर है कि किस बात के लिए तुम्हारे भीतर घृणा है और किस बात के लिए आकर्षण है। यदि बुराई के लिए नफरत और भलाई के लिए आकर्षण न हो, तो सच्चा धर्म साधन नहीं चल सकता, ज़िंदगी तबाही से नही बच सकती और उच्च रूप में नहीं ढल सकती। ऐसे जन को यदि कोई धर्म का साधन बताए भी, तो वह उसकी कदर नहीं करेगा बल्कि उसे परे फेंक देगा। तुम सोचो कि कुछ जनों के धर्म साधन कुछ दिन चलते हैं और फिर नहीं चलते, उसकी तह में क्या बात है? यह कि जिसके हृदय में मेरे प्रति घृणा की लहर पैदा होती हो, वह मेरे सम्बंध में सच्चा धर्म साधन आरम्भ ही नहीं कर सकता या लगातार चला नहीं सकता। नीच घृणा से भरकर कोई जन कहां कहां निंदा कर जाता है, उसका भी उसे उस पागलपन की हालत में कुछ पता नहीं लग सकता। परन्तु ऐसी गतियां करके वह मेरे साथ योग करने के हरगिज़ योग्य नहीं रहता। श्रद्धा भाव की बुनियाद पर भी यदि तुम कोई धर्म साधन करना चाहो, तो वह तब ही चल सकता है, जब तक सच्ची श्रद्धा स्थिर रहे। जब श्रद्धा की आंख फूट जाएगी तब तुम्हें दिखाई देना बंद हो जाएगा। तुम्हारे सच्चे मोक्ष और विकाश के लिए यह आवश्यक है कि तुम मुझे कहीं अंगुली रखने दो, मुझे कहीं सचमुच अपने हृदय में स्थान दो। यदि ऐसा न हो सके, तो फिर मैं चाह कर भी तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं? जो मुझे घृणा करता हो, मेरे देव प्रभाव उस तक किसी प्रकार से भी नहीं पहुंच सकते। इसलिए आवश्यकता है कि तुम कभी घृणाकारी न बनो। तुम अपने भीतर के श्रद्धाभाव को कोई हानि न पहुंचने दो और श्रद्धासूत्र के द्वारा मेरे देव प्रभावों को पाते रहकर इस हालत में आओ कि किसी प्रकार तुम्होर भीतर मोक्ष और विकाश की सच्ची आकांक्षा पैदा हो सके। यह संग्राम होने पर भी सचमुच जीवन का ठीक सिलसिला चल सकेगा। तब ही तुम्हारा धर्म का सच्चा साधन होगा। जब तक ऐसी आकांक्षा नहीं जागती, तब तक धर्म का सच्चा साधन नहीं हो सकता, नाम का साधन हो सकता है। रसमी साधन हो सकता है परन्तु सच्चा धर्म का साधन नहीं हो सकता। रसमी साधन का कोई फ़ायदा नहीं है। इसलिए आवश्यकता है कि किसी प्रकार तुम मोक्ष और विकाश के सच्चे आकांक्षी बन सको, तभी तुम्हारे संबंध में मेरा संग्राम सच्चे अर्थों में सफल हो सकेगा, वरना नहीं। यदि तुम मेरे साथ ठीक संबंध स्थापन कर सको, तुम्हें जो बुराई अब दिखाई नहीं देती, वह फिर दिखाई देने लगेगी और जो भलाई अब दिखाई नहीं देती, वह देखने लगोगे और मेरे बल को पा कर बुराई से निकलने और भलाई लाभ करने के योग्य बनोगे। अब यदि इस प्रकार तुम्हारी अपनी सच्ची भलाई करने के योग्य बनोगे। अब यदि इस प्रकार तुम्हारी अपनी सच्ची भलाई का ही सिलसिला न चल सके, तो तुम औरों का क्या ख़ाक भला कर सकोगे? इसलिए पहले खुद सच्चे अर्थों में अपनी सत्य मोक्ष और अपने सच्चे विकाश के आकांक्षी बनो। फिर जहां तक तुम खुद मोक्ष लाभ करोगे, और सच्चा विकाश पाओगे, उतने दर्जे औरों के लिए भी सच्चे अर्थों में सेवाकारी हो सकोगे। काश! कि ऐसे सच्चे धर्माभिलाषी जन पैदा हों।

धर्म जीवन

खण्ड 16 अंक 11
नवम्बर 2004
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मेरी अद्योगति के कारण और धर्ममार्ग की रोकें

मेरी नाना नीचगतियों से अपने अति उच्च और कोमल हृदय पर विविध प्रकार के आघात लाभ करने वाले, परन्तु फिर भी मेरे परित्राण के लिए चेष्टा करने वाले भगवन् महामान्य पूजनीयवर श्री देवगुरु जी!

मैं आपके परमहितकर्ता रूप के सन्मुख अपने मस्तक को झुकाता हूं, और आपका अपने लिए शुभ आर्शीवाद दान मांगता हूं।

हे देव! मेरी उन नीचताओं की मैल कि जिसने मेरे आपके साथ सम्बंध को शिथिल किया है, मुझे आपके जीवन के स्रोत से परे किया है, और मेरे आत्मा के भीतर विष की न्याई भरकर उसे महाहानि पहुंचाई है, उसे कई अंगों के विचार से मुर्दा बनाया है, बहुत महंगी है। उसे बहुत कुरेद कुरेद कर निकालने की आवश्यकता है। वह मामूली चेष्टा से निकालने वाली नहीं। उसके निकालने के लिए अपनी ज्योति और शक्ति की गैरमामूली हरारत मेरे हृदय पर पहुंचने की आवश्यकता है। मैं कितनी बार दिमाग से उसके निकालने की आवश्यकता अनुभव करता हूं और देखता हूं कि उसके निकालने के बिना मेरा भला नहीं, लेकिन उसके भीतर से निकालने की जो पीड़ा है, उसे सहने के लिए अपने तंई अति दुर्बल अनुभव करता हूं। एक एक जन कि जिसके ज़ख़्म में बहुत पीप भर चुका है, उस पीप के निकलने के लिए डाक्टर जो चीरा देना चाहता है उसकी पीड़ा से घबराता है, और चीरा दिलाना नहीं चाहता, वही हाल अनेक बार मेरा भी होता है। लेकिन पीड़ा चाहे कितनी ही हो, जब आत्मा का हित इसी में है कि सारी पीप को बाहर निकाला जावे, तो मैं दुर्बल होकर भी अपनी ऐसी सारी मैल को अपने भीतर से निकालना चाहता हूं। जिस जिस विकार का मुझे आपकी ज्योति में पता लगता जावे, उसे अपने भीतर से कुरेद कुरेद कर निकालना चाहता हूं। आपकी ज्योति और शक्ति मेरी सहायक हों।

सब से प्रथम मेरा जो विकार मुझे आप से परे करने का कारण होता रहा है और मेरे आपके साथ सम्बंध को हानि पहुंचाता रहा है, वह मेरे भीतर का अहं है, कि जिसकी बहुत सी शाखएं हैं। उनमें से कुछ का वर्णन नीचे करता हूं :-

1. आप जब मेरे किसी दोष, अपराध अथवा

गलती पर अपनी नाराज़गी का प्रकाश करते रहे हैं, तो मेरा यह अहं कई बार मुझे अंधा करके, मेरी आंखों में अपनी नीचता की धूल झोंककर मुझे आपसे परे कर देता रहा है। आप के हितकर्ता रूप को देखने के अयोग्य बना देता रहा है, आपको उल्टे रूप में प्रकाशित करता रहा है। लेकिन पीछे से अपने नशे के दूर होने पर आपकी बताई हुई गल्ती या अपराध कई बार गल्ती या अपराध अनुभव हुआ है। अथवा उसके सम्बंध में कुछ कुछ बोध जागा है। यह जो उस समय, मैं अहं से अंधा होकर उल्टा देखने लगता हूं, उसका कारण आपके सम्बंध में श्रद्धा और विश्वास की कमी है। वरना क्यों नहीं मुझे आपके बताने के साथ हि अपने दोष को दोष अनुभव करना चाहिए। मुझे चाहे उस समय दिखाई दे या न दे? मैं किसी प्रकार आपके सम्बंध में अपने भीतर की इस श्रद्धा और विश्वास की कमी को दूर कर सकूं, और आपके साथ अपने सम्बंध को ठीक अवस्था में ला सकूं! ऐसा आपका शुभ आर्शीवाद दान मांगता हूं।

2. दूसरा विकार, कि जो मेरे भीतर अपना विषमय असर छोड़कर आपके साथ मेरे सम्बंध को हानि पहुंचाता है और मुझे धर्म मार्ग में चलने में रोक बनता है, वह मेरे भीतर की मान वा प्रशंसा की वासना है। किसी छोटे से छोटे अच्छे काम को करके भी कई बार दिल दिल में प्रशंसा के स्थान में अप्रशंसा के मिल जाने पर भीतर ही भीतर दुःखी होना। यह एक ऐसा रोग है कि जो मेरे आत्मा को अनेक बार बड़ी हानि पहुंचाता रहा है। मेरे कई बार एक अच्छे भावों को अपने ताप से दग्ध कर देता रहा है। अच्छे कार्यरूपी अमृत में अपना विष मिलाकर उसे भी विषमय बना देता रहा है। उस अच्छे कार्य के करने से जो किसी अच्छे भाव की उत्पति अथवा विकास होना चाहिए था, उसकी जड़ों में यह अपना विष पहुंचाकर उस अच्छे भाव का नाश कर देता रहा है। मेरे भीतर इस स्वार्थमय भाव को उत्पन्न करके आप जो पूर्ण हित और शुभ स्वरूप हैं, मुझे आपसे और आपके धर्मराज्य से परे फेंक देता रहा है। ओह! नशई जैसे नशे के जहरीले असर में उसकी हानियों को नहीं देखता, इसी प्रकार मैं भी अनेक बार मान और प्रशंसा वासना के वश में होकर अपने आत्मा के लिए उसके ज़हरीले और महाभयानक असरों को नहीं देखता रहा, और बराबर इस विष का सेवन करके अपने आत्मा को नीच, गंदा, रोगी और कोढ़ी बनाता रहा हूं और जैसे एक एक पौधा, कि जिसकी जड़ों में कोई कीड़ा लग जाता है, प्रतिदिन पानी के देने पर भी पनपने में नहीं आता, सूखता और सड़ता चला जाता है, इसी प्रकार मेरे आत्मा का अनेक बार हाल हुआ है। प्रतिदिन अच्छे अच्छे साधनों को करके भी अपने जीवन की शक्तियों को समाज के नाना शुभ कार्यो में खर्च करके भी, इस एक वासना रूपी कीड़े के लगने से आत्मा का धर्म भावों में विकास साधन नहीं हुआ। मैं आप से ऐसी ज्योति और शक्ति का दान मांगता हूं कि मैं अपने इस रोग को अधिक से अधिक देख सकूं। यह महारोग किस किस रूप में आकर मेरे आत्मा पर हमला कर जाता है, उसे पहचान सकूं और इसके सूक्ष्म से सूक्ष्म ज़हरीले असरों से अपने आत्मा को बचाने के लिए लगातार संग्राम कर सकूं। ऐसी आपकी शुभ सहायता मुझे प्राप्त हो।

3. हे देव! मेरे भीतर का तीसरा निरंतर विकार जो मुझे धर्म मार्ग में रोक बनता रहा है, अथवा मेरे आत्मा में अपना विष संचार करके उसके लिए

महा-हानिकारक प्रमाणित होता रहा है, वह ईर्ष्या का महानीच भाव है। यद्यपि एक लम्बे अरसे से मैं अपने हृदय को इस नीच भाव से आप की कृपा से बहुत कुछ आजाद देखता हूं। शायद सूक्ष्म रूप से अब भी उसका कुछ असर होता हो, लेकिन शुरू शुरू में जब आपके श्री चरणों में आया था, और उसके पीछे भी बहुत वर्षो तक इस नीच भाव का मेरे ऊपर अमल होता रहा है। यह नीच भाव साधारणतः अपने किसी साथी प्रचारक या कर्मचारी के सम्बंध में काम करता रहा है। यदि आपने या किसी ने उनके काम की प्रशंसा की है, उसको आप ने मेरी अपेक्षा कोई अधिक उच्च अधिकार दिया है उसको अपने अधिक निकट आने का अवसर दिया है, अपने किसी साधन में उसे शामिल किया है, और मुझे शामिल नहीं किया है उसके साथ अधिक बातचीत की है उसे अधिक सेवा का अधिकार दिया है, कोई वस्तु प्रदान की है, किसी उच्च पद पर नियुक्त किया है, अथवा उसे कोई अधिक शारीरिक अथवा पारिवारिक सुख प्राप्त हैं, इत्यादि इत्यादि, यह या इसी प्रकार से और अवसरों पर मेरे भीतर इस नीच भाव ने अपना न्यून वा अधिक असर किया है। ओह! यह किस कदर महानीच और हानिकारक भाव। कहां औरों के शुभ और उनकी उन्नति में मुझे प्रसन्न होना चाहिए था, और कहां अपनी नीच प्रकृति के कारण मेरा नीच हृदय उल्टा प्रभाव लाभ करता रहा है। चूंकि ऐसी हि पुरानी नीच प्रकृति को लेकर हम लोग आपके श्री चरणों में आए हैं। इसीलिए वर्षो तक उस नीचता का विष हमारे आत्माओं में काम करता रहता है, और आपके दिए हुए दान को भी हानि पहुंचाता रहता है। लेकिन आपका अमृतमय जीवन धन्य है, कि जिसके उच्च प्रभावों से एक एक नीच हृदय की ऐसी नीचता क्रम क्रम से कटती जाती है। अब मैं आपकी कृपा से अपने हृदय को इस नीचता के विष से बहुत कुछ बचा हुआ देखता हूं। और जो कुछ उसका लेशमात्र मौजूद है, उसे भी अपने भीतर से आपकी शक्ति की सहायता से निकालना चाहता हूं, और वर्षो से जो मैल अपने आत्मा में एकत्रित कर ली है, उसे अपने भीतर से धोना चाहता हूं। आपकी उद्धारिणी शक्ति मेरी सहाय हो। आपका जीवन रस अधिक से अधिक मेरे भीतर संचार हो। कि जो मेरे भीतर के ऐसे सारे विकारों को, सारे रोगों को, सारे कोढ़ों को, और सारे गंद को दूर कर दे।

इस प्रकार में किसी गंद को भी रखकर मेरे जीवन का मार्ग बंद रहता है। आपका दिया हुआ दान सुफल नहीं होता। मेरे भीतर के विकारों के कारण यह जब ज़हर में बदल जाता है मैं इस समय जैसा कुछ इन विकारों को देख रहा हूं सदा ऐसा ही, हां इस से भी बढ़कर भयानक रूप में देख सकूं। और उसे ढूंढ ढूंढ कर अपने भीतर से निकालने के लिए संग्राम कर सकूं।

(चलता)

(एक सेवक)

परम पू० भगवान देवात्मा का 154 वां

महोत्सव मुबारक

जैसा कि पहले सूचित किया जा चुका है परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म महोत्सव बिल्कुल निकट आ रहा है। इस साल यह परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा का 154 वां शुभ जन्म महोत्सव है। यह हर साल कि तरह इस वर्ष भी पूरी श्रद्धा और चाव भाव से 25 दिसम्बर से 28 दिसम्बर 2004 को चण्डीगढ़ 18 डी धर्मशाला में पूरी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस वर्ष महोत्सव मुबारक के दिन शनिवार, इतवार, सोमवार, मंगलवार के होंगे।

सब साथी सेवकों व अन्य सम्बन्धित जनों से निवेदन है कि वह इस शुभ अवसर पर अवश्य पधारें और अभी से ही इस सम्बंध में तैयारियां शुरू कर दें। और अपनी छुट्टी आदि का प्रबंध निश्चित कर लें।

27 नवम्बर को परम पूज्नीय भगवान देवात्मा के समबंध में खास साधनों के दिन आरम्भ होते हैं। इस आरम्भिक दिन को भी पूरे चाव व उल्लास के साथ जगह जगह मनायें।

महोत्सव से लाभ उठाने के लिए अपने हृदयों को भी तैयार करने का खास साधन करने का ख्याल रखें। अभी से परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा के आद्वितीय जीवन में सम्बंध में पाठ और विचार अवश्य शुरू कर दें। जीवन कथाएं, आत्मकथा, मुझ में देव जीवन का विकास (भाग 1, भाग 2) और अद्वितीय त्यागों का पाठ विशेष तौर पर उपयोगी और हितकर हो सकता है।

इतवार के दिन पूजा के साधनों से पहले हालात अनुसार प्रभात फेरियां निकालने या देवात्मा की महिमा के गीत गाने का साधन हो सकते हैं।

गुरु महाराज और उनकी समाज से जुड़कर अपना वा अपने पारिवारिक जनों का जो सच्चा हितसाधन हुआ है। उस पर चिन्तिन और उपकार स्मरण करने और लिखने का साधन करके अपना भला करें।

दूसरों से भगवान की महिमा का ब्यान करके उन्हें महोत्सव से लाभ उठाने के लिए तैयार करें। दूसरों से पाप छुड़ाने का साधन आदि करने और उन तक समाज की पुस्तकें और पत्रिकाएं पहुंचाने की सेवा करके अपना भला करें।

सच्चा सेवक, सच्चा श्रद्धावान सेवक कभी किसी कीमत पर भी इस शुभ अवसर से वंचित नहीं रहना चाहेगा क्योंकि यह बात हमारी सेवकी की प्रतिज्ञा में भी शामिल है। अभी से अपने परिवार को व और जनों को इस शुभअवसर से लाभ उठाने के लिए हितकर संग्राम शुरू कर दें। अपने हालात के अनुसार नए वस्त्र बनवाने का प्रबंध करें और विशेषकर एकाकारी भी तैयार कर रखें।

यह शुभ अवसर अत्यंत हितकर और अद्वितीय अवसर है। इस शुभ अवसर पर जो रोशनी और तेज भरे प्रभाव वितरण होते हैं, वह सारे संसार से अद्वितीय वस्तु हैं। उन प्रभावों से हमारा हित अटल रूप से जुड़ा हुआ है। अब तक या आंयदा जो हमारा हित हुआ है या होगा वह इन्हीं महादुर्लभ प्रभावों के कारण ही है। कोई अनुमान नहीं लगा सकता कि किस को कितना लाभ हो सकता है। हमारे जीवनों के तख़्ते ऐसे ही महादुर्लभ अवसरों द्वारा ही पलटे हैं।

इसलिए बार बार यह नम्र निवेदन है कि हम में से कोई भी जन इस महासौभाग्य के अवसर से वंचित न है।

धन्यवादी होंगे।

मंत्री

मनोविज्ञानिक स्तर पर अहिंसा

हिंसा अपने आपको शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर दर्शाती है। हिंसा विचार में भी और क्रिया में भी हो सकती है।

जब मनुष्य अपनी तर्क शक्ति के साथ सोचता और विचारता है, तो वह शारीरिक हिंसा की कठोरता को शारीरिक दण्ड के रूप में अनुभव करता है अर्थात साधारणत: शारीरिक दण्ड को ही हिंसा समझा जाता है।

हम जानते हैं कि सभ्यता की उन्नति के कारण मनुष्य ने शारीरिक दण्ड की करूपता को अनुभव किया है, उसने पारिवारिक, सामाजिक और संस्था के स्तर पर सम्बंध बनाने के लिए अहिंसक साधनों को अपनाने के तरीके ढूंढें हैं। आधुनिक मनोविज्ञान समाज के एक ढीठ, झगडालू वा विनाशकारी प्रकृति रखने वाले बच्चे वा अपराधी के साथ भी कैसे व्यवहार करें, इसमें सहायता कर रहा है। मनोवैज्ञानिक तरीके हिंसा को छोड़ प्यार भरे व्यवहारों के द्वारा उपरोक्त प्रकार के मनुष्यों को सुधारने वा निखारने की हिमायत रखता है, इस ढंग से अजीब क्रिश्में पैदा होते हैं। प्यार और मेल मिलाप मनुष्य के जीवन की उलझनों को सुलझाने का ऐसा ढंग हैं, जो बहुत प्रभावशाली है। जल्दी नतीजे प्राप्त करने की बेताबी हमें प्यार और मेलमिलाप में विश्वास करने की आज्ञा नहीं देती। प्यार का रास्ता, अहिंसा का मार्ग लम्बा हैं, परन्तु वास्तविक रूप से सफलता का मार्ग है। प्रत्येक मनुष्य का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह प्यार और मेलमिलाप की रोशनी में अपने बृताव को परखे।

हम मनोवैज्ञानिक रूप में हिंसक बनते हैं, जब किसी अपराधी या कुकर्मी इंसान को घृणा करते हैं, उसे दूर करते हैं, त्याग करते हैं या उसकी बदनामी करते हैं। ऐसे व्यवहार से उस जन को निराश करते हैं और सुधरने का अवसर ही नहीं देते।

आधुनिक मनोविज्ञान हमें बताता है कि बच्चे को सबसे सख्त वा हानि पहुंचाने वाली सज़ा उस समय होती है, जब हम उसे अपनाने से इंकार करते हैं। जब मां अपने बच्चे को यह कहती है, "मैं तुझे प्यार नहीं करूंगी, दूर चला जा, मैं तेरे साथ बात नहीं करूंगी" इस व्यवहार से बच्चे की सुरक्षा की भावना का आधार ही समाप्त हो जाता है। वह अपने आप को अकेला अनुभव करता है, फिर बेरहम दुनियां में खो जाता है। इस कारण वह असमाजिक कार्य करने की ओर तत्पर हो जाता है। एक बच्चे को अपने व्यवहार से यह महसूस करवाने की बजाए कि आप उसे पसंद नहीं करते, उस पर विश्वास नहीं करते, या उसे त्याग करना चाहते हो, मार लेना अच्छा है, चाहे यह भी कोई ठीक कदम नहीं, बहुत कठोर सज़ा है। बहुत सारे बिगड़े हुए और लापरवाह बच्चों का इतिहास ऐसे परिवारों से मिलता है, जिन परिवारों से उन्हें उचित प्यार नहीं मिला, या फिर उनके माता पिता झगड़ते रहते हैं। बच्चा हर समय माता पिता के प्यार के लिए ललायित रहता है। यदि माता पिता बच्चे को प्यार नहीं देते, उसके साथ सहयोग देकर सम्बंध स्थापन नहीं करते, बच्चा अपने माता पिता से दूर चला जाता है। उसको दो शब्द 'शाबाश' के और अपने किसी कार्य पर प्रशंसा,

उसकी कोशिशों के लिए उत्साह, अपनी गल्तियों के लिए हमदर्दी और अपनी भूलों के लिए भी सहारे की आवश्यकता होती है। बिगड़े हुए बच्चों, उदंड और पक्के अपराधी बन जाने वाले बच्चों को माता पिता से उचित और यथेष्ट प्यार नहीं मिला होता।

जब माता पिता झगड़ते रहते हैं, तो बच्चों का प्यार भरा मन अपने माता पिता के प्यार में बंट जाता है। वह अपने माता पिता दोनों को प्यार करता है, और उनके आपसी व्यवहार के कारण वह बालमन संघर्ष में पड़ जाता है। बच्चा सब हालातों को समझने के लिए पूर्ण रूप से अक्लमंद नहीं होता। उसकी ज़िन्दगी का धुरा ही नष्ट हो जाता है। वह अपने चौतरफा बुराईयों का शिकार हो जाता है। वह पढ़ाई में पिछड़ जाता है। उसका व्यवहार अपने अध्यापिकों से अपमान जनक हो जाता है। वह अपने स्कूल वा क्लास में जाने से कतराता है। उसके घर का वातावरण उसकी आशाओं पर पानी फेर देता है, इसीलिए वह एक अच्छा नागरिक बनने के योग्य नहीं रहता।

विवाह के विषय में भी यही होता है। कठोर शब्दों का प्रयोग झगड़ों की जड़ होता है। आपसी प्रेम का ताना बाना जड़ से ही शिथिल होना आरम्भ हो जाता है। जो जन घर से निराश रहते हैं, वह नशों के शिकार हो जाते हैं, अपने आफिस के काम में नियमित नहीं रहते। औरतों को यदि उनके पति अपने से दूर रखें या घृणा करें, वह इस निराशा से बिमार रहने लगती हैं। उनका व्यवहार भी बुरा हो जाता है। एक दूसरे से दुखी होकर पति और पत्नि एक दूसरे से विश्वास घात भी कर सकते हैं।

देव धर्म की भाषा में मनोवैज्ञानिक स्तर पर उपरोक्त हिंसा को Low hate (नीच घृणा) कहते हैं। नीच घृणा एक एक जन को उसके लक्ष्य से भ्रष्ट कर देती है। वह जिसे घृणा करता है, उसकी न केवल कोई सहायता ही नहीं करता है, बल्कि उसकी बदनामी करके तृप्त होता है, यदि यह नीच घृणा अधिक बन जाए तो उस जन को ऐसा नीच घृणाकारी जन अपनी वाणी या व्यवहार से हानि पहुंचा कर खुश होता है।

मनोवैज्ञानिक स्तर पर हिंसा हमारे आचरण में बुरे विचारों गुस्से से पेश आने आदि द्वारा प्रगट होती है। हमारे व्यवहार बताते हैं कि बिना किसी का खून किए भी हिंसा कैसे हमारे भीतर वर्तमान है।

जब हम किसी व्यक्ति के विरुद्ध कठोर शब्द प्रयोग में लाते हैं, उसके विरूद्ध बोलते हैं, झूठे दोषारोपण करते हैं, तो हम अपनी हिंसक प्रवृति का परिचय देते हैं। कई बार हमारी अलोचना सच्ची होती है। सत्य बात कहनी अर्थात वैसा कहना, जैसा कि हकीकत है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि बात कहते हुए हम हिंसक बन जाएं, या सत्य बोलने का गुण हमें अपने कठोर शब्दों में दूसरों के कामों का अवमूल्यन करने का नैतिक अधिकार देता है।

सत्य 2 प्रकार के होते है। इस दुनियां को समझने के लिए अनुसंधान करना एक सच्चाई है। इन सच्चाईयों को जैसी हैं वैसा प्रगट करना एक कर्तव्य है। गलैलियो या डारविन के लिए निःसंदेह यह कर्तव्य बनता है कि अपनी खोजों को दुनियां के सामने रखें, चाहे वह सचाईयां कितनी भी कठोर लगें और दूसरों की भावनाओं को घात पहुंचाए। परन्तु प्रत्येक सचाई को भी प्रगट करने के लए हमें अपनी वाणी में कठोरता से हर हाल में परहेज़ करना चाहिए।

किसी डाक्टर की मरीज को ऐसी सचाई बताने की कोई नैतिक जिम्मेवारी नहीं होती, जो

उसकी मौत को प्रेरित करे। उस सचाई को वह अपने तक भी सीमित रख सकता है या उसके हितकारियो वा सेवा करने वालों को बता सकता है हमें यह सोचना चाहिए कि जो सत्य बात हम बता रहें हैं, वह उसके भले के लिए है, नहीं तो चुप रहना ही बेहतर है। बिना कारण किसी को शब्दों द्वारा दुख पहुंचाना हिंसा ही है। किसी को उसकी गल्तियों के बताते हुए शर्मसार करते रहना हिंसा ही है।

नीच घृणा भाषा द्वारा अधिक प्रगट होती है। किसी भी मनुष्य का सभ्य होना, किसी का हितकारी होना उसक बोलने के ढंग से पहचाना जाता है। हमें यह देखना है कि किसी की गल्ती बताते हुए हम कहीं हिंसक तो नहीं बन रहे। हिंसक शेर, भेड़िए ही नहीं होते, यदि हम अपनी बोलचाल से किसी को मानसिक घात पहुंचाते हैं या अपने से दूर कर लेते हैं तो हम भी किसी शेर भेड़िए से कम नहीं होते हैं।

अब मनोवैज्ञानिक स्तर पर 'अहिंसा' क्या है? अहिंसा का अर्थ है, हमारे किसी व्यवहार से कोई हमारे से दूर न हो जाए, हमने उसकी गल्तियों के बावजूद भी उसको त्यागना नहीं। जब हजरत ईसा ने अपने उन साथियों से भी क्षमा मांगी, जिन्होंने उन्हें सूली चढ़ाया था, तो उन्होंने अहिंसा का प्रयोग किया। उन्होंने ऐसे दुव्यवहार के बाद भी उन्हें क्षमा दान दिया, अपना प्यार उनसे घटाया नही। यदि उनकी मानसिकता में अहिंसा होती तो वह कभी उन्हें क्षमा न कर सकते। यह उनकी अहिंसा का ही पक्ष है कि जो उन्होंने अपने उपदेश में कहा है कि अपने दुश्मन को भी प्यार करो, उनको आशीश दो, उन्हें घृणा न करो, चाहे उन्होंने तुम्हें दुख ही क्यों न पहुंचाया हो। दुश्मन से प्यार करने का यह अर्थ भी नहीं कि उसकी गल्त बातों की प्रशंसा करो।

प्यार के कई रूप हैं। प्यार सबसे पवित्र चीज़ भी हो सकता है। जब हम किसी पवित्र आत्मा की प्रशंसा पूजा वा भक्ति करते हैं, तो यह प्यार बहुत उच्च कोटि का है।

एक मां अपने बच्चे को प्यार करती है, तो उसके गुणों को लेकर नहीं। बच्चा एक अबोधी जीव होता है। वह अपने बिस्तर को भी गंदा कर देता है, यह उसके काम कोई प्रशंसनीय नहीं, वह माता पिता पर निर्भर होता है। मां का प्यार बच्चे की अच्छाई या बुराई सोचे बिना ही होता है। अहिंसक व्यवहार बिना किसी शर्त के होता है। यह कई प्रकार से प्रगट होता है: -

1. उनको भी आशीष देना जो तुम्हें शाप देते हैं, बुरा भला कहते हैं।
2. उनका भी समय पड़ने पर भला करना, जिन्होंने तुम्हें हानि पहुंचाई है।
3. उनके लिए भी प्रार्थना करना, जो तुम्हें घृणा करते हैं।

यह तीन बातें दुश्मन से भी दूरी करने से बचाती हैं।

हमारे लिए आदर्श गुण मनोवैज्ञानिक स्तरपर अहिंसा है, जो हमें प्यार भरा इंसान बनाती हैं, हमें अपने स्वार्थ से ऊपर उठाती हैं। यदि यह गुण पैदा नहीं होते तो हम कोई कत्ल खून किए बिना, शाकाहारी होकर भी हिंसक जीव ही रहते हैं।

(S.P. Kanal)

2,000 साल की गुलामी

अगर वास्तविक अर्थों में आज भारतवासी सुखीसंपन्न और स्वतंत्र होते तो इस तरह के सवाल ज्वलंत न रह जाते कि हम 2,000 वर्ष क्यों गुलाम रहे या आज हम कितने स्वतंत्र है?

आज इन सवालों का ज्यादा महत्व है, खास कर इसलिए कि हम ने यह भी भलीभांति देख लिया है कि राजनीतिक स्वतंत्रता से हमें वैसा कुछ नहीं मिला, जिस की हमें उम्मीद थी। न तो सत्ता, न ही विपक्ष और न ही हमारी प्रणालियां इस लायक हैं कि हमें यह देश अपना लगे। समस्याएं, असुरक्षा और धर्मांधता अधिक उग्र हुई है। बचीखुची सुरक्षा हमारे कर्मठ व्यक्तियों के बूते पर दिखाई देती हैं।

आइए, उन जड़ों को देखने की कोशिश करें। जिन के ऊपर हीनता, गरीबी और गुलामी (और उस के ऊपर जुल्म ढाने वाली क्रूरता वर धूर्तता) पनपती है।

8-10 दिन, 10-20 वर्ष की गुलामी की बात नहीं है, हम 2,000 वर्ष गुलाम रहे। शक, हूण, तुर्क, अफगान, मुगल, अंगरेज, पुर्तगाली, फरांसीसी बारीबारी आए और हम स्वयं को लुटते रहे। थोड़ी सी तादाद में नाम भर की शक्ति बटोर कर कोई आया और हमें या तो लूट कर चलता बना या हमारी गरदन पर सवार हो बैठा।

क्या ऐसा नहीं लगता कि हम ने इस देश की आत्मा, इस के स्वभाव को ही गुलाम रखने की आदत डाल रखी है? क्या यह नहीं लगता कि हमारे देश में गुलाम बनने की संभावनाएं सदा बदलती रहती हैं? ऐसा न होता तो क्यों लोग हमें ही रौंदते, हमें ही बारबार परेशान, हैरान करते? हम ने किसी को बुलाया भी नहीं, और सैंकड़ों सत्तालोलुप हमारे यहां घुसपैठ करने को तत्पर रहे।

धर्म व संस्कृति मुख्य कारण

बरदाश्त करने की हमारी प्रवृत्ति सनातन है, किंतु हम एक सच्ची बात कभी बरदाश्त नहीं कर सके-हमारी गुलामी का मुख्य कारण हमारी तथाकथित संस्कृति और धर्म है। गरीब तो हम पहले से ही थे। गरीबी को गौरव मानने का प्रशिक्षण तो हमें मिला ही हुआ था। बाद में गुलामी को भी हम ने स्वीकार कर लिया।

यह स्वाभाविक है कि गरीबी ही गुलामी बने। अपनी भाग्यवादी धारणाओं के कारण हम कंगाली का भी गुणगान करते रहे और भारत को 'सोने की चिड़िया' घोषित कर के गौरवान्वित भी होते रहे।

हमारी गुलामी की जड़ गरीबी में है और गरीबी की जड़ है हमारे धर्म में।

हमारे शंकराचार्य ने जो धर्म बनाए, उन से हमारी गरीबी मजबूत हुई। शंकराचार्य ने जगत को सपना (माया) कहा और हम ने मान लिया। अब कौन सपने सजाए, कौन उम्मीदें रचे और कौन श्रम करे? किस के लिए करे? भला सपने की संपन्नता भी कोई संपन्नता होती है? सपने को सच मानना तो एक मूर्खता है।

बस, यहीं से हम ने यह गुर सीखा जो स्वयं को तो निठल्ला, पलायनवादी और अकर्मण्य रख कर भी महान बताता है और दूसरे को मेहनती,

सुखीसंपन्न देख कर उस की हंसी उड़ाता है। इस के बावजूद हमारी तकलीफ यह रही है कि हम दूसरे को सुखी देख कर तिलमिलाते तो हैं ही खुद भी सुखी संपन्न होने के अनगिनत उपाय करते हैं।

लेकिन ये उपाय हमारे धर्म से निकले हुए होते हैं-व्रतउपवास, कथाकीर्तन, हवनयज्ञ और कुछ सरकारी किस्म के सांप्रदायिक सद्भाव (जिन का आधार धर्म भी होता है) और जब हमारे ढकोसले और पूजा अर्चना हमें संपन्न नहीं बना पाती तो हम सीधे भ्रष्टाचार पर उतर आते है। यह मात्र संयोग नहीं है कि भारतीय समाज जितना धार्मिक है, उतना ही बेईमान और चरित्रहीन भी। यही कारण है कि आज प्रमुख धर्मस्थल मुकदमों और गुटबाजी के केन्द्र बने हुए हैं।

जो देश एक बार यह मूर्खतापूर्ण विचार अपना ले कि संसार मिथ्या है, वह मानवीय हो कर नहीं जी सकता, अपने दुख को मिटाने के लिए वह जितना भी प्रयत्न करेगा, वे सब अव्यावहारिक होंगे या भ्रष्ट होंगे। भ्रष्टाचार को अपना आचरण न मान कर वह ईश्वर की मरजी अथवा माया घोषित करने में कभी हिचक नहीं करेगा।

यही कारण है कि हम लोग सदा उन मुट्ठी भर लोगों से भी हार गए जो दुनियां को यथार्थ मानते थे। यथार्थवादी मनुष्य के आक्रमण, बचाव और संसार में जीने के तरीके भी यथार्थपूर्ण ही होते हैं। इसीलिए वह विजेता होता है।

ये बेकार के तर्क हैं कि आक्रमणकारियों ने हमारे साथ छलकपट किया। हमारी मान्यताओं ने हमें सदा इस बात के लिए तैयार रखा कि हम शोषित व पराजित हों। हमारी दुर्दशाओं का पूरा जिम्मा हमारी यथार्थविरोधी धर्म पर है। यही वजह है कि ज्ञानविज्ञान से उत्पन्न सुविधाओं की खोज के स्थान पर हम ईश्वर की खोज में भटकते रहे।

मूढ़तापूर्ण विचारों का नतीजा

भला ईश्वर भी कहीं खोजने से मिलता है? खोज का विषय तो प्राकृतिक शक्तियां और उन से प्राप्त सुविधाएं हैं। मिथ्यावाद और माया जैसी धारणाओं से विज्ञान का कोई संबंध नही है। विज्ञान का संबंध मनुष्य की आकांक्षाओं, संघर्षो और धरती पर टिकी जीवन प्रणालियों से है, जब कि हमारा पाखंडी धर्म आज भी हमें वैतरणी पार कराने वाली गऊमाताओं से जोड़े हुए है। हम अभी तक पेटू ब्राह्मणों को स्वादिष्ट भोजन करा कर इस मूढ़तापूर्ण विचारों को पाले हुए है कि वह भोजन हमारे पूर्वजों या पितरों को मिलेगा।

हम यह सोचने की तकलीफ भी नहीं करते कि भोजन पहले पेट में जाता है, फिर पचता है और उस के बाद खाने वाले के शरीर को कुछ तत्व दे कर मल का रूप धारण कर लेता है। क्या यही तरीका है अपने पितरों को भोजन कराने का।

हमारी गुलामी का बीज उसी दिन बो दिया गया था जिस दिन इस धरती पर मनुष्य ने 'जगत मिथ्या' की बात मान कर एकमात्र 'ब्रह्म' को सत्य मान लिया था। नादिरशाह, तैमूरलंग, चंगेजखान, सिकंदर रहे होंगे आततायी और क्रूर, मगर हमारी मूर्खता ने ही तो उन्हें आमंत्रित किया था।

हमारे कहने का आशय यह कदापि नहीं है कि हम ने जगत से इतर किसी 'सत्य' को ईमानदारी से कभी नहीं ढूंढ़ा। हम ने दूसरों की बात मान ली कि 'संसार झूठ है'। इस में हमें सुविधा नजर आई। हमें लगा कि अब हमें न तो मेहनत और बुद्धि का अवलंबन करने की आवश्यकता है

और न सिर पर कोई जिम्मेदारी आएगी।

हम ने ईश्वर और धर्म जैसे विषयों पर कभी भी जिम्मेदारी और ईमानदारी से विचार नहीं किया। शायद इस का भी यही कारण था कि हम यथार्थ को कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहते थे। हमारे मंदिर, तीर्थ और पूजाअर्चनाएं हमारे दिखावटी ईश्वर व धर्म के रूप हैं।

हमारा दर्शन तक इस धारणा से ग्रस्त रहा कि बाहर तो मिथ्या हैं और भीतर सत्य है। सदियों तक किसी ने यह सोचने का कष्ट नहीं किया कि 'बाहर' (जगत) के बिना 'भीतर' (ब्रह्म) का सवाल ही नहीं उठता। और यदि जगत झूठा है तो ब्रह्म स्वत: झूठ हो जाता है। शरीर ही झूठा है तो उसके भीतर स्थित चेतना की कैसी वकालत?

जगत व जिस्म ऊर्जा के स्रोत हैं और इन्हीं से विज्ञान का अस्तित्व है। विज्ञान से ही सुखसुविधाएं पैदा होती हैं, फिर भले ही वह बैलगाड़ी हो, (राकेट न सही)। माना कि केवल धन से सुख नहीं खरीदा जा सकता। किंतु क्या ब्रह्म के जाप से रोटी, कपड़ा और मकान खरीदा जा सकता है? उस के लिए तो धन ही चाहिए। धन का सही उपयोग सुखसंतोष देता है। यदि धन से सुख नहीं मिलता तो क्या निर्धनता से मिलेगा।

निर्धनता का गौरव

मूर्खतापूर्ण धर्म का यह परिणाम है कि आज हमारे देश में साधन होते हुए भी अधिकांश लोगों को, स्त्रियों को, बच्चों को पौष्टिक भोजन की जानकारी तक नहीं। 'जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया'-संपन्न लोगों का यही दर्शन है। किंतु गरीब के लिए यह गुलामी बढ़ाने की तरकीब है। 'दरिद्रनरायण' जैसे आकर्षक नामकरणों ने भी निर्धनता का गौरव बढ़ाने में घातक भूमिका निभाई है।

संपदा और सुख पुरुषार्थ से पैदा होते हैं। पोथियों से नहीं। दुनियां में जीने के लिए अपने दौर में काम आने वाले हुनर चाहिए ज्योतिषियों के पास जा कर हाथ दिखा कर भविष्य पूछना, लाटरी का टिकट खरीदना, ग्रहनक्षत्र के जोड़ बैठाना, हद दरजे की भाग्यवादिता है। इस से सिर्फ दुख ही हाथ आते है। धन मिल भी जाए तो उस के उपयोग की कला समझ में नहीं आती। मेहनत ही सिखाती है धन का सही इस्तेमाल। वह किसी हास्यापद बात है कि अपने यहां की बेवकूफियों को तो हम ने छाती से चिपका रखा है और हम बनते हैं 'गौरवमयी परंपरा के रक्षक' पश्चिम की उपयोगी खोज का लाभ उठानेवाले अपने देशवासी को हम अंधानुकरण करने वाला व्यक्ति कह डालते हैं।

अंधानुकरण ही करना है तो क्यों न आइंनस्टाइन का करें? मनु के रास्ते पर चल कर हमें क्या मिलेगा? उस में जो ठीक बातें हैं, उन्हें वैसे भी ऐरागैरा आदमी मानता ही है, बाकी तो षड्यंत्र ही भरा है मनु की पोथी में।

हनुमान चालीसा या रामचरितमानस पढ़ने से तो अच्छा है कि हम फरायड को पढ़ें। फरायड को पढ़ने से तुलसीदास की मानसिकता भी समझ में आती है और सामान्य तथा असामान्य व्यवहारों की जानकारी भी मिलती है। हां, संगीत में झूमना है तो लोकगीतों की अच्छीखासी परंपरा हमारे पास है, उस के लिए न तुलसी की चौपाइयों को तोते की तरह गाने की जरूरत है, न ही पश्चिम के कानफोड़ कार्यक्रम आयोजित करने में कोई तुक है।

अंधानुकरण अगर बुरा है तो सब से पहले

अपने देश की गलत मानसिकता का बुरा है। यहीं पर आदत ठीक रहे तो दूसरों के अंधानुकरण की नौबत ही नहीं आएगी।

हमारी जातियों, जातिनाम गोत्र, संप्रदाय और धार्मिक वर्ग इस बात के प्रबल साक्षी हैं कि हम पिछलग्गू और रुढ़िवादी हैं। हम 2,000 वर्ष की गुलामी के बाद भी वही बात संभाले हुए हैं जिस के ऊपर गुलामी का वटवृक्ष पनपता है।

क्या कारण है कि भारत में घूमने पर हमें पंजाबी, बंगाली, मराठी, पहाड़ी और राजस्थानी वगैरह तो बहुत मिलते हैं, पर भातीय दिखाई नहीं देते।

2,000 से भी ज्यादा वर्षों की गुलामी इस देश ने उन्हीं कारणों से झेली है, जिन कारणों से आज भी वह त्रस्त और आतंकित है। हमारी अनेकता में जो एकता है और विवधता में जो तालमेल है, वह मात्र मजबूरी है। तथ्य यही है कि हमारी अनेकता और विविधता में पारस्परिक द्वेष, स्वार्थ और 'अपना उल्लू सीधा करो' का भाव घर कर गया है।

मानसिक गुलामी

हंसी तब आती है जब शरीर को झूठा मानने वाले धार्मिक लोग अपने शरीर की सुखसुविधा के लिए दूसरों की हत्या करने लगते हैं। यह दृष्टि मानसिक गुलामी का ज्वलंत उदाहरण है। मानसिक गुलामी के रहते किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता दो कौड़ी की भी नहीं है। राजनीतिक स्वतंत्रता पा जाने पर मानसिक गुलामी स्वच्छंद व उच्छृंखला हो कर एक दिन अपनी व अपने जैसे लोगों की समाप्ति पर जा पहुंचती है।

इस तथ्य के प्रमाण हमें सदियों से मिल रहे हैं और हाल की घटनाएं भी यही बताती हैं उदार व स्वच्छ कहे जाने वाले सिख धर्म ने ज्यों ही धर्मांध लोगों को सहन किया, त्यों ही उसे जबरदस्त धक्का पहुंचा। हिंदू व सिख के बीच की दरार भले ही मामूली सी थी। किंतु उसे फैलाने में अवसरवादी असामाजिक तत्त्वों, गुंडों और बदमाशों ने कोई कसर नहीं रखी।

यह मानना गलत होगा कि लूटखसोट की यही प्रवृति हमारी धार्मिक प्रणालियों की देन नहीं है। हमारे यहां बच्चे के जन्म से पूर्व ही उस की रगों में धर्म का जहर चला जाता है। हमारे धार्मिक गढ़ों-मंदिरों में आजकल क्या हो रहा है? वैष्णोदेवी के बदमाशों के बारे में तो सारा देश जान ही चुका है। तिरुपति में हुई बदकारियों के विवरण भी प्रकाश में आ चुके हैं। और आजकल उस का प्रबंध कानून के जरिए सही करना पड़ा है। कमाल है भगवान और उस के चमचों की व्यवस्था कानून को करनी पड़ रही है।

कलकत्ता के काली मंदिर में विराजमान कार्टून पंडे हों, पुष्कर का जैन मंदिर और उस में कब्जा कर चुके नशे के व्यापारी (तस्कर) हों, इलाहाबाद के संगम के लुटेरे हों, आगरा या पाटनदेवी में (और अन्यत्र कई मंदिरों में जमे) मोटेताजे महंत हों, हरिद्वार की गंदगी हो, मथुरा, वृंदावन, गोकुल और दाऊजी वगैरह के धार्मिक चोरउचक्के हों, कश्मीर के मट्टन मंदिर के झपट्टामार पंडे हों अथवा पर्वतीय क्षेत्रों में गांवगांव बैठे हुए बकराखाऊ या खीरखाऊ गोबर गणेश देवता हों आजकल सब का धंधा तेज है।

धर्म, ईश्वर और संस्कृति के नाम पर यह सड़ागलाा धंधा क्या अंगरेजों, मुगलों, तैमूरों या

नादिरशाहों के हुक्म से चल रहा है? क्या यह बकवास पगपग पर इसलिए नहीं झांकना चाहता कि ऐसा करने से उस का भोंदू और रोंदू धर्म नष्ट हो जाएगा या सुधर जाएगा?

पूजापाठ या मंदिरों की व्यवस्थाएं सही कर देने से भी समस्या का हल नहीं होता। जरूरत उस मानसिकता की चीरफाड़ करने की है जो आदमी की बनई मूर्तियों में विद्यमान कला को नहीं, स्वार्थपूर्ति करने वाले देवीदेवताओं को तलाश करती है या लोगों को बताती है कि रिश्वत (चढ़ावा) दो और सुखीसंपन्न हो जाओ।

इसी दृष्टि ने आज तक भारत को बजाए सुखीसंपन्न बनाने के दुखी, लाचार, गरीब, पराजित और भ्रष्ट बनाया है। हमारी अब तक की जो सब से बड़ी 'उपलब्धि' है वह है, भ्रष्टाचार का विरोध करने की बजाए भ्रष्टाचार के अंग बन जाना, और कदम कदम पर रोना कि 'हमारे करने से कुछ नहीं होगा।'

(सरिता से साभार)

एक भाई का अपनी बड़ी बहन के नाम पत्र

मेरे बहुत-बहुत उपपकार योग बड़े बहन जी

आपजी के मुबारक चरणों में हम दोनों की तरफ से हाथ जोड़ कर प्रणाम।

आपकी मुबारिक सेहत के लिए शुभ कामना करता हूं। आज मुझे आपका वह महान रूप बार-बार सम्मुख आता रहा। रक्षा बंधन के दिन एक जी टी. वी. पर भाई बहन दिखाये। बहन की उम्र 92 साल की थी और भाई की 90 साल की थी। बहन अपने भाई के हाथ पर राखी बांध रही है उसने बताया कि मैं 90 साल से अपने भाई की कलाई पर राखी बांध रही हूं। उसी वक्त मेरे को आपकी याद आई और मन भर आया कि इसी तरह मेरी बड़ी बहन हर रक्षा बंधन के दिन सुबह 7.00 बजे आ जाती थी। साथ मिठाई लेकर और बड़े प्रेम से राखी बांधती थी और भी आपके मुझ पर बहुत उपकार हैं। मेरी शादी की सब जिम्मेवारी आपने ली। जब मैंने कारोबार शुरू किया तो आपने ही मेरी बहुत मदद की और हौसला दिया और बच्चों की शादी पर भी आपका आर्शीवाद बना रहा। जब मेरी शादी को 50 साल पूरे हुए और आप अपना किराया खर्च कर मेरी शादी की सालगिरह पर कैनेडा आई उसके लिए मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूं। यह सब कुछ भगवान देवात्मा की कृपा से ही हुआ है।

आपका छोटा भाई

बलवंत अरोड़ा

एक पत्नि की नज़र में

सचिन घर पर बहुत सामान्य व्यक्ति हैं, सभी पतियों की तरह। वे घर के कामों में कभी-कभी सहयोग करते हैं, पर हर काम में नहीं। वे सफाई और रोजमर्रा के अन्य काम नहीं करते। पर कभी-कभी कुकिंग में मदद करते हैं। वे सोचते हैं कि वे बहुत अच्छे कुक हैं।

वे एक अच्छे पिता हैं और बच्चों पर फिदा हैं। जब भी वे घर पर होते हैं तो बच्चों के साथ खेलना पसंद करते हैं। वे उनके साथ खुद भी बच्चे बन जाते हैं। वे उनहें चिढ़ाते हैं, उछालते हैं और एक सामान्य पिता की तरह सब काम करते हैं। उन्हें डिजाइनर कपड़े पसंद हैं, पर उनका कोई खास ब्रांड नहीं है उन्हें जो भी पसंद आता है वे खरीद लेते हैं। वे मुझे स्कर्ट या आधुनिक कपड़े नहीं पहनाना चाहते। वे मुझे सलवार कमीज, साड़ी या जींस में देखना पसंद करते हैं। सचिन तो मेरे हेयर स्टाइल का भी बहुत ध्यान रखते हैं। वे चाहते हैं कि मैं बालों को सादा रखूं।

जो गुण उनका मुझे सबसे ज्यादा पसंद है वह यह कि ज़िंदगी में उनके दोहरे मानदंड नहीं है। वे खुद के प्रति सच्चे रहते हैं, ईमानदार रहते हैं और अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं। उन्होंने सफलता व लोकप्रियता को अपने सिर पर नहीं चढ़ने दिया है। वे घर पर या जनता के बीच एक सुपर स्टार की तरह व्यवहार नहीं करते और बहुत विनम्र बने रहते हैं। वे बहुत पसंद आने वाले इंसान हैं। अब तक भी कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने मेरी बात न मानी हो। वे हमेशा मेरे साथ रहते हैं और मेरी मदद करते हैं। प्यार जताने के मामले में भी वे बहुत संजीदा हैं। एक वेलेंटाइन पर वह विदेश में थे। उन्होंने वेलेंटाइन डे के एक दिन पहले मुझे फोन किया। मुझसे पूछा कि वेलेंटाइन पर क्या करूंगी। मैंने कहा कि शायद में अपने लिए 'वेलेंटाइन डे' के रूप में एक छोटा सा ब्रेसलेट खरीदूं। और उन्होंने कहा कि ठीक है। पर बात यहीं खत्म नहीं हुई। अगले दिन सवेरे सवेरे घंटी बजी और जब मैंने दरवाजा खोला तो एक व्यक्ति भूरे रंग के लिफाफे में एक छोटा सा पार्सल लिए खड़ा था। वह बोला 'साहब ने भेजा है।' जब मैंने उसे खोला तो मैं सातवें आसमान पर थी। सचिन ने एक सुन्दर डायमण्ड नेकलेस भेजा था। वह एक सुन्दर सरप्राइज़ था मेरे लिए। उन्होंने 24 घंटे के भीतर यह सब करने के लिए काफी मेहनत की थी। अगर मैं उनके स्वभाव में कुछ बदलना चाहूंगी तो उनकी विनम्रता को बदलूंगी। वह बहुत विनम्र हैं। मैं वह दिन हमेशा याद करती हूं जब उन्होंने मुझे बताया कि वे अपने माता पिता से हमारी शादी की बात करने वाले हैं। कई बार जब महिलाएं उनके पास आकर फ्लर्ट करती हैं तो मैं उनसे ईर्ष्या या घृणा नही करती। मेरे लिए यह सामान्य बात है, क्योंकि मैं समझती हूं कि वे सुपर स्टार हैं, इसलिए यह तो होगा ही। इसके अलावा खेल के बार में मेरी जानकारी बहुत सीमित है। वह मुझसे क्रिकेट की बातें कम करते हैं। क्योंकि उन्हे लगता है कि मुझे क्रिकेट के बारे में कुछ पता नहीं। हां, इस विषय पर अपने भाई अजीत से वे बहुत बातें करते हैं। उनसे मेरी आज तक कोई बहस नहीं हुई है।

अंजलि तेंडुलकर

सत्य धर्म बोध उत्सव

(प्रोगाम का बाकी)

भाव प्रकाश

श्रीमान सुखदेव सिंह जी : तीन पक्षों की ओर ध्यान गया। (1) महान हस्तियों के जीवन की ओर ध्यान गया। विशेषकर सरदार जमीयत सिंह जी। इन हस्तियों का उपकारी रूप नज़र आया। समय आएगा कि लोग इन्हें पूजा करेंगे। सम्बंधों में, मिथ्या विश्वासों और पापों से बचने की ओर से बेहद भला हुआ है। आद्वतिय त्याग पढ़ें हैं, बाकी और पढूंगा। सबसे सुन्दर देवात्मा का देवरूप है। श्रद्धेय जी के अनुरागी रूप की सुन्दरता के विषय में ब्यान किया गया। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का जीवन निराशा दूर करता है। मुझ से श्रीमान जी के सम्बंध में अपमान मूलक गतियां हो जाती हैं, उसके लिए शर्मिंदा होता हूं। श्रीमान जी की अन्दरूनी सुन्दरता और प्राप्तियां, मेरे ऊपर उपकार मुझे नज़र आते हैं। मुझे गल्ती पता लग जाने पर दुख नहीं होता। श्रद्धेय जी की कुर्बानियां प्रभावित करती हैं। अपनी गल्तियों को देखने की आवश्यकता है।

श्रीमान कुलदीप सिंह जी : पीली पगड़ी न लाने का दुख है। मैं पक्का वायदा करता हूं कि आगे से हमेशा लेकर आया करूंगा। एक लड़का मां को इसलिए मारता है कि मां के मरने के बाद उसे नौकरी मिल जाएगी। सत्संग में अधिक से अधिक आने की कोशिश करूंगा। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी की सेवा के दृष्य सम्मुख आए हैं। गांव में या गांव के निकट सत्संग होंगे, तो उनमें सेवाकारी होने की लालसा पैदा हुई है।

श्रीमान धीमान साहिब : रो रोके बताया कि पिता की बेहद मेहरबानियां नज़र आई हैं। अपना कमीना रूप, विशेष रूप से पिता के सम्बंध में धन को लेकर उन्हें नज़र आया।

श्रीमान अवतार सिंह जी : सत्य धर्म बोध उत्सव, महोत्सव वा कल्याण सत्संग सब पर लेट पहुंचने के लिए शर्मिंदा हूं। प्रतिज्ञा करता हूं कि आगे से लेट नहीं आऊँगा। मेरे बच्चे बहुत अच्छे हैं। गुरु की कृपा से सत्संग और ही दुनियां में वास करवा देता है। उच्च धर्म सम्बन्धियों की संगत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। श्रीमान बख़तावर सिंह जी के प्रति सम्मान पैदा हुआ है।

श्रीमान बख़तावर सिंह जी : जितनी संगत की है, बरकत मिली है, जितना घाटा रहता है, उसका अर्थ है उतनी संगत कम की है। सब प्राप्तियों का सेहरा गुरु के सिर पर है। सम्बंधों में कड़वाहट के लिए जो मेरा हिस्सा है, वह नज़र आया है।

श्रीमान मोहन सिंह जी गज सिंह पुरा : मैं सभाओं में जाके बच गया। यदि मन्सा सिंह जी न होते तो मैं नशों में बर्बाद हो जाता। जर्दा खाना छोड़ दिया है। दुकान के ऊपर लिख दिया कि यदि जर्दा खाता पकड़ा जाऊँ, तो 100 रूपये जुर्माना।

श्री मधुसूदन जी : 22 तारीख की सभा में न जा सकने का दुख है। पैसों का हिसाब किताब करता रहा। माता जी के भीतर हमारे भले की तड़प है। माता जी सदा सभा के लिए प्रेरणा करती रहती है।

माता जी को बहुत बुरा भला कहता रहा हूं। अन्दर अन्दर गालीयां भी निकाल जाता था। बंदर सलाम करता हूं। भगवान देवात्मा की छवि को भी बंदर सलाम करता हूं। मां के पैर दबाने का संग्राम करूंगा।

श्रीमान बूटा सिंह जी : बहुत कमीयां हैं। किसी तकलीफ में आत्महत्या करने की सोचता था। अब गुस्सा घट गया है। श्रीमान जी के पास प्रार्थना है कि वह जल्दी हमारे पास आया करें। मेरे बच्चों को संगत की सख़्त जरूरत है।

श्रीमान सीताराम जी : पत्रिकाएं बहुत हितकर हैं। पढ़कर रो पड़ा। मुझ अनघड़ का भला हुआ है। औरों का मेरे से भी बढ़कर भला हो सकता है।

डाक्टर मन्सा सिंह जी : नीच भावों को मिटाने और उच्च भाव पैदा करने का पूरा संग्राम करूंगा।

श्रीमान आसा सिंह जी : 300 रूपये टिकट के वापिस किए। स्कूल से वापिस आने पर रोटी न मिलने से मां को मारा। दुखी हो रहा हूं। चुंगी के पैसे वापिस किए और जनों ने भी महोत्सव पर पहुंचकर लाभ उठाने के लिए हाथ खड़े किए।

श्रीमान बाल कृष्ण जी छाबड़ा (अनुपगढ़) यह बड़े उत्साह से फोन करके अकेले ही सत्संग पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि मुझे यहां आकर प्रभावशाली वातावरण देखकर बहुत लाभ हुआ है। मैं अधिक से अधिक सत्संग में आने का यत्न करूंगा। मेरी प्रार्थना है कि अनुपगढ़ भी सत्संग रखा जाए। मैं और मेरे साथी उसमें योग देकर अधिक से अधिक लाभ उठाएंगे। उन्हें पदमपुर से आए साथी सेवकों को देखकर बहुत खुशी हुई।

समय बहुत हो चुका था। सभापति जी ने सभा समाप्त करते हुए इस उत्सव की सफलता के लिए परम पू० भगवान देवात्मा और अन्य सहायकारी शक्तियों को धन्यवाद दिया।

धर्मशाला के मैनेजर साहिब, उनकी पत्नि साहिबा भी सभाओं में शामिल होते रहे। उनका दिली भावों से धन्यवाद किया। रसोई के प्रबंध करने, सभाएं कराने की सेवा के लिए भी धन्यवाद किया।

महोत्सव पर आकर अधिक से अधिक लाभ उठाने की प्रेरणा करते हुए देव आरती का गान करके जय ध्वनि करके सभा समाप्त की गई।

(एक सेवक)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 2716914

शुभ संग्राम

(12 अक्तूबर से 19 अक्तूबर तक)

12 अक्तूबर को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से रवाना होकर संगरूर पहुंचे और कुछ किताबें स्टाक में रखने के लिए वहां छोड़ी। श्रीमान सीता राम जी और उनमें सपुत्र डाक्टर कालरा के साथ अपने भले और समाज के हित सम्बंधी बातचीत हुई। शाम को श्रीमान जी वहां से कल्याण के लिए रवाना हो गए।

कल्याण :– 13 अक्तूबर की सवेर से यहां पर श्रीमान जी ने सभाओं का प्रोग्राम शुरू कर दिया। 13 व 14 अक्तूबर को 2–2 व 15 को एक सभा की गई। कुल 5 सभाएं की गई। सभाओं में सेवक–सेविका व अन्य श्रद्धावान शामिल होते रहे। रात की सभा में स्त्रियों के आने से हाजरी अच्छी हो जाती रही। सभाओं में सेवकों की अवस्था अनुसार, विषयों पर ब्यान किया जाता रहा। सत्संग के बिना मनुष्य बेसुध कैसे हो जाता है, मनुष्य अंधेरे में रहकर कैसे नुकसान उठाता है। मनुष्य को सुख का पता है, अपने भले का कोई ख्याल नहीं। पढ़ लिख कर भी मनुष्य का विकास रुक जाता है। सभाएं, शिक्षा, उपकारी व धर्म सम्बंधी विरोधी माहौल में या बुरे वातावरण में कैसे फीके व मामूली दिखाई देने लग जाते हैं। सभाएं अच्छी प्रभावशाली होती रही। श्रीमान बलबहादुर जी के बच्चे, श्रीमान तेज राम जी के परिवारिक जन सभाओं से लाभ उठाने के लिए खुशी खुशी आते रहे।

श्रीमान कुलदीप सिंह जी का सारा परिवार सभाओं में शामिल होता रहा। एक एक जन का हृदय भर भर के आता रहा। उन्होंने आगे सप्ताह तक संगत के साथ रहकर लाभ उठाने का अपना भाव प्रकट किया। कई गांव व स्थानों को देखा गया।

श्रीमान तेज राम जी ने मानसा में सत्संग के अवसर पर पहुंचने के लिए अपने विचार प्रकट किए। श्रीमान करम सिंह जी को उनके घर में जाकर मिला गया। उन्होंने 150 रूपये नियत दान व हित स्रोत का चंदा दिया। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभाओं में पूरा सहयोग व समय दिया बहुत सेवा करते रहे। अपनी जीप में जगह जगह पर ले जाते रहे। एक दिन कुलदीप सिंह जी ने भी काफी समय देकर लाभ उठाया। श्रद्धालु बूटा सिंह जी सभा स्थान की सफाई का ध्यान रखते रहे। सभाओं का पता देते रहे।

इस प्रकार यहां सब सेवकों को किसी न किसी अंश सुचेत होने का अवसर प्राप्त हुआ।

15 तारीख इतवार को श्रीमान बलबहादुर सिंह जी अपनी जीप पर श्रीमान जी के साथ डबवाली मंडी पहुंचे।

रिपोर्ट

डबवाली :– श्रीमान सुखदेव सिंह जी 14 तारीख को डबवाली पहुंचे। उन्होंने मन्दिर की सफाई की व स्कूलों में जाकर इश्तिहार आदि बांटे। सत्संग का पता दिया। 15 तारीख शाम को कल्याण से श्रीमान

बलबहादुर सिंह जी व श्रीमान बलदेव सिंह जी भी पहुंच गए।

रात को एक सभा रखी गई। सभा में बताया गया कि सब मनुष्यों के हृदय नाना प्रकार की नीचताओं से भरे हुए हैं। इनको देखने व इनसे मुक्त होने की जरूरत है। बिना इससे धर्म प्राप्ति नहीं हो सकती। सभा में एक रिटायरड फौजी अफसर ने सिगरेट आदि पीना छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

16 तारीख की सुबह 9.00 और शाम को 6.00 बजे दो सभाएं की गई। सुबह की सभा में हाजरी अच्छी थी। अच्छे भद्रपुरुष सभा में शामिल हुए। उनमें एक पत्रकार साहिब भी थे। सभा में बताया गया कि मनुष्य के लिए धर्म जीवन की प्राप्ति परम आवश्यक बातें हैं। धर्म न पाने से इंसान पशु रह जाता है और कई बार पशुओं से भी निकृष्ट हो जाता है। धर्म उच्च भावों का नाम है। मिथ्या साधन और नीच जीवन धर्म नहीं है। उच्च भावों का नाम है। मिथ्या साधन और नीच जीवन धर्म नहीं है। उच्च भावों से आत्म बल बढ़ता है। धर्म कोई देवी देवता को मानने, व उनका नाम आदि जपने का नाम नहीं है। उच्च भावों के बिना कोई धर्म नहीं होता। यह सभा प्राय: 1:30 घंटे तक चली।

रात की सभा में केवल चन्द जन ही शामिल हुए। सभा में मिथ्या विश्वासों से बचने और 8 प्रतिज्ञाओं की महिमा के बारे में ब्यान किया गया। अगले दिन सुबह 9.00 बजे का समय नियत किया।

17 तारीख को यहां आखरी सभा की गई। इस सभा में अच्छी संख्या में भद्र जन आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य आत्मा के लिहाज से घोर अंधेरे में है। बड़े बड़े गुरु, पीर, उपदेशक, प्रचारक इस अंधेरे के कारण बहुत घाटा व हानि उठा रहे हैं। आत्मा के पहलू में हर मनुष्य रोगी हैं व बहुत दु:ख व हानि का शिकार हो रहा है। गुरु महाराज का सेवक व कर्मचारी बन कर भी हानि उठा रहे हैं। मनुष्य के नीच घातक व विनाशकारी भाव बढ़ रहे हैं वह उस को दिखाई नहीं दे रहे। इस कारण मनुष्य कई प्रकार के दु:खों व हानियों का शिकार हो रहा है। गुरु महाराज की संगत व शिक्षा मनुष्य का आत्मिक अंधेरा दूर करती हैं। मनुष्य को अपनी हानि स्पष्ट दिखाई देने लग जाती है। अधिकारी मनुष्यात्मा अपनी योग्यता के अनुसार गुरु महाराज का बल पाकर उस हानि से बच जाते हैं। इस सभा से कुछ जनों को प्रभावित होने का अवसर मिला।

मंदिर पर जरूरी Sign Board लिखने वाले काम का प्रबंध किया गया। एक मेज बनवाने का आर्डर दिया गया। कुछ जनों को घर जाकर मिला गया। उनको पुस्तकें दी गई। चार दिवारी की मरम्मत करवाने की योजना बनाई गई। केशव जी ने बिजली ठीक करवाई व बहुत जनों को सभाओं में लेकर आते रहे। उसी दिन श्रीमान जी को जीप चला कर 15 – 18 किलोमीटर छोड़ कर आए। सुखदेव जी बहुत सेवाकारी होत रहे। वह 17 तारीख को चण्डीगढ़ के लिए चले गए। मंडी डबवाली में बिजली का बिल ठीक करवा कर 1705 रूपये भरे गए।

श्रीमान जी 17 तारीख को दोपहर 1 बजे थराजवाला पहुंचे। सब साथी सेवकों के घर जाकर मिला गया। रात को श्रीमान बलदेव सिंह जी के

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

परिवार को लेकर सभा करवाई गई। 18 – 19 जन सभा में शामिल हुए। सभा में वातावरण के प्रभावों के बारे में बताया गया। किस प्रकार बुरा वातावरण मनुष्य के जीवन को बिगाड़ता है व हानि करता है। कई उदाहरण पेश किए गए।

गुरु महाराज इस संसार में एक निराला वातावरण ले कर आए हैं। उनकी शरण में आने से, उनकी पैदा की हुई संगत के साथ जुड़ने से हर मनुष्य का भला उसकी योग्यता अनुसार होता है। पापी जीवन बदल जाते हैं व धर्मवान बन जाते हैं। कुछ ठोस परिवर्तन भी बताए गए। सभी को इस वातावरण से लाभ उठाने की जरूरत है।

18 तारीख रात को भी एक सभा की गई। इसमें बताया गया कि मनुष्य के लिए दो बातें सब से ज्यादा भयानक और हानिकारक हैं। एक पाप व दूसरी मिथ्या व झूठ। मिथ्या का शिकार होकर मनुष्य बेहद हानि उठाता है। इस सच्चाई को ठोस उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया। यह सभा सवा घंटे से भी ज्यादा देर तक चली।

19 तारीख सवेर 10 बजे श्रीमान बलवंत सिंह जी के घर सभा की गई। इस सभा में 15 के करीब स्त्री पुरूष आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि उच्च जनों की संगत व उनकी इच्छा अनुसार चलने से सदा भला होता है। अपनी मर्जी करने से सदा हानि होती है। देवात्मा की पैदा की हुई उच्च जनों की संगत के अनुसार चलने से हमेशा भला होता है। गुरु के साथ जुड़कर भलाई आती है। गुरु महाराज से परे होने पर हमेशा घाटा होता है। गुरु महाराज की संगत से जुड़े रहने की प्रेरणा की गई। कई जनों ने अच्छा उत्साह दिखाया।

500 रूपये नियत दान व 350 रूपये दान मिला। इस प्रकार यह संग्राम किसी अंश तक सफल रहा।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

सम्पादक डा॰ विनोद खेड़ा

Book Posts